ज्ञान सेवा भारती संस्थान

व्यक्ति परिचय :- (i) सुशील कुमार 'झा' - ज्ञान सेवा भारती संस्थान का सचिव है। इनका उम्र 60 के लगभग में था। रंग गोरा छरहरा कद-काठी। इनमे सामाजिक विचारों का एक परिपक्व सोच बातचीत के दौर मे लगा। काफी सही मानवीय सोच वाला व्यक्ति है। सामाजिक आंदोलन मे काफी लम्बे समय से जुड़ा था और थोड़ा-बहुत अभी भी है।

(ii) कालिका नन्द झा — यह व्यक्ति सुशील कुमार का भाई है। और बड़े भाई है उम्र 65 के पास मे था। इनका सोच है कि नीचले स्तर के लोगो को सहायता देना चाहिए। इसप्रकार के विचारवान व्यक्ति है।

(iii) शेखर कुमार 'झा' — इनका उम्र 28 वर्ष है जैसा कि मुझे बताया गया परन्तु मै उनसे मिला नहीं हूँ। क्योंकि यह व्यक्ति दिल्ली मे किसी काम से गया था। सुशील कुमार जी का लड़का है।

पहुँच मार्ग :- मैं 15.05.2008 को अपने घर समस्तीपुर माहें से दरभंगा गया। उसके बाद दरभंगा से निर्मली ब्लॉक के लिए ट्रेन सकरी (दरभंगा) मे बदलकर सकरी से छोटी लाईन की ट्रेन से 16.05.08 को 10 बजे पहुँचा। निर्मली ब्लॉक से कमलपुर गाँव जहाँ पर स्कुल है 1 बजे मोटरसाईकिल से पहुँचा।

माहें से दरभंगा, दरभंगा से निर्मली, निर्मली से कमलपुर
45 km 75 KM 30 KM

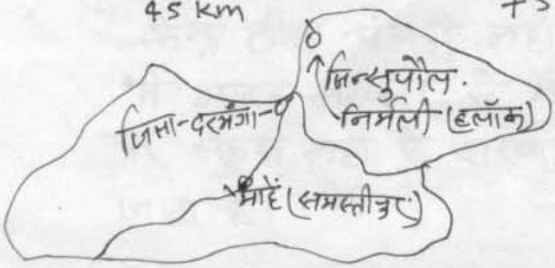

भौगोलिक स्थिति :- बिहार राज्य का सबसे पिछड़ा जिला - सुपौल है। सुपौल जिला में निर्मली ब्लॉक काफी पीछे है। पिछड़ा होने का मुख्य कारण है। कोशी नदी का होना। कोशी नदी जिसे पूरी दुनिया में 'बिहार का शोक' के नाम से जाना जाता है। इस नदी का पानी पूरे बिहार को डूबो देती है। 5 करोड़ जनता को थोड़ा बहुत प्रभावित अवश्य ही करता है। यह नदी नेपाल देश से निकलकर बिहार की समतल उपजाऊ भूमि को, मे आकर पानीमय हो जाता है और कृषि आच्छादित भूमि की उपजाऊ शक्ति तो बढ़ा देती है परन्तु फसल लगाने का मौका नहीं देती है। निर्मली ब्लॉक पूरी तरह बाढ़ युक्त क्षेत्र है। यहाँ का एक भी गाँव नहीं है जो बाढ़ की चपेट से बचता हो। हर साल बाढ़ की चपेट में आ घिरता है। काफी जानमाल व मनुष्यों को इस प्रलयंकारी बाढ़ से क्षति होती है। निर्मली ब्लॉक का पंचायत, कमलपुर, डगमारा, कनौली इत्यादि सभी गाँव भी बाढ़ की चपेट में पूरी तरह से घिर जाता है। गाँव का सभी क्षेत्र बाढ़ में 6: महिना डुबा रहता है।

सामाजिक स्थिति :- निर्मली ब्लॉक पूरी तरह से पिछड़ी, हरिजन एवं मलिन जातियों की संख्या से लैश है सवर्ण जाति (ब्राह्मण और राजपूत) की आबादी बहुत कम है। अल्पसंख्यक (मुसलमान) आदि की जनसंख्या भी इस ब्लॉक में अधिक है। फिर भी जातिवाद का शिकार तमाम दलित, हरिजन अल्पसंख्यक और पिछड़ा सभी पड़ा है। क्योंकि जातिव्यवस्था बिहार की धरोहर नींव है। सर्व शिक्षा अभियान के तहत पूर्व में 12 केन्द्र चलता था ऐसा बताया। परन्तु अभी कोई केन्द्र ठीक चलता नहीं पाया गया। सर्व शिक्षा अभियान में भारत सरकार से मलिन और निम्न बस्तियों जहाँ पर स्कुल नहीं है सरकार द्वारा प्रोत्साहन राशि दिया जाता है।

जहाँ-जहाँ स्कुल चलता था। मुसहर, चमार, कहार और पासी जाति की टोला मे चलता था।

आर्थिक ढाँचा —: आर्थिक उपार्जन के लिए कोई कल कारखाना और न ही कुटीर या कोई लघु उद्योग है जिसके अधिक से अधिक लोगों को आर्थिक प्रबंधन के तहत रोजगार प्राप्त हो सके। खेती और पसीना कारी मजदूरी से प्राप्त आय ही आर्थिक उपार्जन का मुख्य स्रोत है। सवर्णों के पास खेती लायक प्रयाप्त भूमि है परन्तु दलित, हरिजन के पास कोई खेती लायक भूमि नही है। अगर बटाईदारी एवं ठिकापरस्त भूमि है तो मात्र एक फसल से अपना जिविका चलाना होता है। महिलाएँ काफी संख्या मे ईंट भट्ठो और खेत मजदूर है इसके अलावा बालश्रम भी होता है। मजबूरन बच्चों को अपने माँ-बाप के साथ खेत-मजदूर और भट्ठा मजदूर बनकर अपनी बचपन बिताना पर रहा है। महिला मजदूरी 50रू० प्रतिदिन के हिसाब से मिलता है। पुरुष को 60रू० और बच्चों को मात्र 25रू० अधिक मेहनत के बाद ही मिलता है। भारत सरकार की राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम के तहत भी लोगो को पूरा रोजगार 100दिन का भी नही मिलता है (NREGA) भी पूरी तरह विफल है।

साक्षरता : — महिला और बच्चो की साक्षरता प्रतिशत काफी कम है। महिला साक्षरता 20 प्रतिशत और बच्चो की साक्षरता दर 25 प्रतिशत है। इस हरिजन, अल्पसंख्यक महिला बच्चो की। साक्षर की प्रतिशतता में इतनी कमी का मुख्य कारण है प्रत्येक टोलो मे स्कुल का नहीं होना और और काफी दूर में। स्कुल पंचायत के मुख्य गाँवों मे है सुदूरवर्ती गाँव में स्कुल नही है। प्राईवेट विद्यालय भी नहीं है क्योंकि वे बच्चे के माँ-बाप फीस नही देकर पढ़ाने लायक है। काफी अक्षम है

सड़क, बिजली और यातायात :- इस जिला के किसी भी क्षेत्र में N.H नही है कोई पक्की सड़के नहीं है रोशनी के रूप मे बिजली पुरे जिले में कहीं पर भी नही है। इन दोनो के न होने के कारण यहाँ के लोगों को काफी दिक्कतो का सामना करना पड़ता है। याद है एक मुहावरा है - जहाँ न पोलवा-तारवा, समझअ बिहार वा। ये है बिजली की परिभाषा। यातायात के साधन की काफी दुर्लभता है। जिले के अन्दर एकही-कहीं पर बस की यातायात सुविधा है बाकी छोटी लाईन की रेल सुविधा, देश के सुदूर क्षेत्रो से कोई विशेष यातायात का लगाव नही है। ट्रेन और पाँव पैदल ही यात्रा चलना होता है।

स्वंय सहायता समूह - ज्ञान सेवा भारती संस्थान के द्वारा 60 समूह का बनाया जाना बताया परन्तु मौके पर मात्र 10 समूह का पासबुक दिखाया गया। समूह की स्थिति कोई अच्छी नही पायी गयी। किसी भी समूह को प्रशिक्षण वगैरह नही मिला है संस्थान से। संस्थान सरकारी ऋण भी उपलब्ध किसी भी समूह को नही करा पाया। समूह द्वारा एकत्रित राशि बैंक से पुनः निकाल कर समाप्त हो रहा है। मात्र 10 से 12 समूह अभी बचा है। कोई कार्यक्रम वगैरह समूह नहीं करा पाया।

सर्व शिक्षा अभियान गतिविधि का मूल्यांकन -: सर्व शिक्षा अभियान के तहत पुरे निर्मली ब्लॉक क्षेत्र मे 12 केन्द्र संचालित होना बताया गया। हरिपुर, कमलपुर, डगमारा, कुनौली इत्यादि ग्राम पंचायत मे चला था। परन्तु मात्र एक साल के शिक्षा कार्यक्रम से बच्चो में व शिक्षक मे कोई ठीक सम्पर्क कभी भी नही रही। मात्र कागजों पर ही स्कुल ठीक ढंग से चला जमीन पर मात्र कोई दो केन्द्र ही थोड़े समय के लिए चला। पंचायत- कमलपुर, टोला-

हरिपुर। नन्दी चौपाल के घर में मास्टर थे-शैलेन्द्र मोहन सा। दूसरा, पंचायत-कमलपुर, टोला-कामत। मोहम्मद बच्चों के घर में मास्टर थे- गुलाम मुस्तफा इसके अलावा कहीं पर कोई केन्द्र चला या नही चला मुझे चलकर दिखाया नहीं गया।

सरकारी स्कूल :- सरकारी स्कूल मात्र पंचायत के मुख्य गाँवो मे चल रहा है पंचायत के टोला अछूता है जिनकी आबादी 600-700 के बीच है इस टोला में कोई स्कूल नही है। पंचायत के सरकारी विद्यालय की स्थिति भी कोई अच्छी नही है। टोला से स्कूल की दूरी 1.5 से 2 Km है जिसमे छोटे बच्चे स्कूल नही जाते है इसके अलावा इन्हे बाल श्रमिक अपने माँ-पिता द्वारा बनना होता है। शिक्षा से कोशो दूर होने का मुख्य कारण है।

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की स्थिति [Position of Non formal Education center] NFE :- मै निर्मली ब्लॉक के डगमारा पंचायत मे जाना चाहा और जानना चाहा कि कहाँ पर केन्द्र चलता है बच्चों और उनके माता-पिता से मिलें ताकि शिक्षा केन्द्रो के बारे मे जान सकू परन्तु मुझे नहीं ले जाया गया केवल जानकारी दी गई कि डगमारा मे केन्द्र चलता है। इसीलिए मैं डगमारा के बारे मे कुछ भी नहीं विस्तार से बता पाऊँगा।

इसके बाद कमलपुर पंचायत आना हुआ जहाँ संस्थान का आश्रम नुमा कार्यालय है। यहाँ के पंचायत के शिक्षा केन्द्रो का भुआयना करने चला दोपहर में तो तीन केन्द्र पाँव पैदल भुआयना किया पहला- ब्रह्मस्थान दूसरा- हरिपुर, तीसरा-कामत टोला, । इस तीनो केन्द्र मे 5 शिक्षक पढ़ाते थे-जिसमे मैं केवल दो शिक्षको से मिला अन्य महिला होना और पूजा पूजा के कारण व सवर्ण वर्ग होने को लेकर मुझसे बातचीत व मिलना नहीं हुआ। यह तीनो केन्द्र भी प्रायः बन्द पाया गया। मात्र हरिपुर वाला केन्द्र पर सर्व शिक्षा अभियान वाला भी केन्द्र चला होगा प्रतीत हुआ देखने पर। परन्तु पेज 60-5

अभी बहुत दिनो से केन्द्र बन्द है। इसी केन्द्र पर बच्चो ने मिला इनके माता-पिता भी मिले। जिन्होने सकारात्मक बातें की। बाकी जगहो पर कोई कुछ स्थायी नही बयान भी पाया। यहाँ पर मेरे जाते ही 10 बच्चा मिला जो अपने घरो के आसपास खेल रहा था। बच्चो ने जो कुछ अपने मास्टर जी से पढ़ा था कुछ मुहजबानी मुझे सुनाया इस प्रकार इस तीन केन्द्र के अलावा मुझे कहीं कोई केन्द्र नही दिखाया गया। हरेक पंचायतो की दूरी 5 से 8 Km तक है। तो अन्य केन्द्रो को देखना चाहा परन्तु प्राकृतिक आपदा आँधी तूफान वर्षा का आजाने से थोड़ी बाधा हुई। परन्तु मेरे बार-बार चाहने के बाद भी अन्य केन्द्रो पर नही ले जाया गया। इसीलिए मैं आँखो देखा हाल वस्तुत नहीं कर पाऊँगा।

निष्कर्ष और मूल्यांकन :— क्षेत्र बाढ़ ग्रस्त है। जिस कारण सरकार की तमाम क्रियायें विफल है। खासकर यहाँ भ्रष्टाचार की व्याप्त होने के कारण तमाम सर्वहारा तबके के लोग जीवन भर समस्याओं मे घिरा रह जाता है। और इस नई पीढ़ी के बच्चों के सामाने काफी समस्याये आकर खड़ी है। यहाँ के बच्चों के माता-पिता मे अगर उत्साह और सही चर्चा को अमल में उतारा जाय तो इन बच्चों का भविष्य मे कुछ तब्दीली आ सकती है। अगर आशा की गतिविधि के माध्यम से कार्य किया जाय और थोड़ा बहुत ध्यान रखा जाय तो एक बार इस बच्चों के घेरे अंधकारमय भविष्य में कुछ बदलाव किया जा सकता है। क्योंकि मेरा मानना है अगर सुधार की सोच से कार्य किया जाय तो थोड़ी-बहुत समस्याओं को संघर्ष के रूप मे हमे देखना होगा लेकिन केन्द्र मे पहले बच्चों को रखा जाय क्योंकि हमे कार्य को प्राथमिकता के तौर पर देखना होगा। केन्द्र को सुचारु रूप से संचालन के लिए शुरु मे थोड़ी ही सहायता से प्रयोग को आगे बढ़ाया जाय क्योंकि बड़े ~~असंगित~~ असंगठित होने पर छोटी पहल ही सकारात्मक सोच की तरफ हमे अग्रसारित कर सकता है।

इसके अलावा इन लोगो के पास ~~वैकल्पिक~~ वैकल्पिक रणनीति एवं सोच का पूरा-पूरा अभाव है कि अगर मेरे पास सरकारी या गैर सरकारी सहायता के अभाव मे भी हम समाज मे कैसे काम कर सकते है? इसी कारण आप सभी केन्द्र बन्द पड़ा है। नही तो कुछ न कुछ काम अवश्य चलता चाहे प्राइवेट ही क्योंकि सही कार्य का रूपान्तर होकर सोच और दिशा काममय होता लेकिन पूरी तरह से बन्द नही होता फण्ड नही तो काम नही हमे व्यवसायिक सोच तैयार करता है। भरोसेमन्द से निर्भरता की तरफ बढ़ने का हमारे पास कोई सूत्र होना चाहिए। तभी जाकर हम सामाजिक कार्य मे सफल हो सकते है वर्ना एक प्रयास हमारा हमेशा विफल रहेगा। फिर भी तमाम समस्याओ के बाद हमे सकारात्मक लेकर सहायता करना चाहिए। लेकिन प्रपोजल के प्रोफेशनल बजट मे संसोधन करने की जरूरत है इस प्रकार के असंगठित कार्य मे इतनी भारी-भरकम का होना कोई बहुत जरूरी नही है। अगर आशा के सिद्धान्तों के आधार पर सहयोग करना है तो कार्य को अपने चलने की दिशा मे आने को सुनिश्चित होने दिया जाय।

सर्वेक्षक

मनोज कुमार; ग्राम+पोस्ट- माहे।
थाना - मंगलगढ़, जिला - समस्तीपुर
बिहार, 848208,
मो० - 9931956501
Email - manoj81-asha@yahoo.co